आचार्य वसुनन्दि सैद्धान्तिक

जीवन-परिचय : वसुनन्दि नाम के अनेक आचार्य हैं, परन्तु ये वसुनन्दि सैद्धान्तिक उनसे भिन्न आचार्य हैं।

आचार्य वसुनन्दि का समय 11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध या 12वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

रचना-परिचय : आपकी तीन रचनाएँ मानी जाती हैं—

1. आप्तमीमांसा वृत्ति : आचार्य समन्तभद्र के देवागम स्तोत्र या आप्तमीमांसा की 114 कारिकाओं पर वसुनन्दि ने अपनी वृत्ति लिखी है। यह वृत्ति अत्यन्त संक्षिप्त है। इसमें श्लोकों का सामान्य अर्थ दिया है, विस्तार नहीं किया है।

2. जिनशतक टीका : आचार्य समन्तभद्र ने 116 पद्यों में चौबीसों तीर्थंकर की स्तुति करते हुए स्तवन ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थ का मूलनाम 'स्तुतिविद्या' है। इसी ग्रन्थ पर वसुनन्दि आचार्य ने टीका लिखी है।

3. आचारवृत्ति : 'मूलाचार' मुनियों के आचार विषय का वर्णन करनेवाला प्राचीन मौलिक ग्रन्थ है। आचार्य वसुनन्दि की यह आचारवृत्ति इसी ग्रन्थ पर लिखी टीका है,। इसका विषय मूलाचार ग्रन्थ के समान है।